नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थपित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में आचार्यकुल का अखिल भारतीय अधिवेशन

शिक्षकों के उन्नयन में आचार्यकुल की भूमिका नई दिशा एवं कार्यक्रम पर हुई चर्चा

वर्धा, 6 सितंबर 2019: आचार्य विनोबा भावे द्वारा संस्थापित आचार्य कुल का राष्ट्रीय अधिवेशन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के श्यामा प्रसाद मुखर्जी विद्या भवन के कस्तूरबा सभागार में शिक्षक दिवस, 5 सितंबर को आयोजित किया गया। अधिवेशन

की अध्यक्षता आयार्चकुल की नवनियुक्त अध्यक्ष डॉ. पुष्पिता अवस्थी ने की। इस अवसर पर मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल,वरिष्ठ गांधी विचारक रामजी सिंह,मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार,विनोबा जी की शिष्या सुश्री प्रवीणा बहन देसाई,आचार्यकुल के पूर्व अध्यक्ष डॉ.हीरालाल श्रीमाली,राम भाऊ म्हक्सर उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन ग्रामोपयोगी विज्ञान केंद्र,वर्धा के सचिव डॉ. सोहम पंडया ने किया। अधिवेशन में महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश,बिहार,आंध्र

प्रदेश,तमिलनाडु,छत्तीसगढ़,हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों के 70 से अधिक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम के पूर्व श्यामा प्रसाद मुखर्जी भवन के सामने वृक्षारोपण किया गया। दीप प्रज्वलन एवं आचार्य विनोबा भावे की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आचार्य विनोबा भावे ने समग्र शिक्षा के

उन्नयन के लिए सन 1968 में आचार्यकुल संगठन का प्रवर्तन किया था।

अपने उदबोधन में गांधी विचारक डॉ. रामजी सिंह ने आचार्य विनोबा भावे के जीवन कार्यों का परिचय देते हुए कहा कि विनोबा जी के भूदान आंदोलन से अकेले बिहार में 22.5 लाख एकड़ जमीन और संपूर्ण भारत से 68 लाख एकड़ जमीन प्राप्त हुई थी। उन्होंने कहा कि आचार्य की व्याख्या ज्ञान के लिए भूख और प्यास हो उसे आचार्य कहेंगे। उन्होंने नैतिक शिक्षा की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि देश के मानस में परिवर्तन की आवश्यकता है। उन्होंने आचार्यकुल निरपेक्ष और अराजनैतिक

कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि लोक और लोकोत्तर के बीच समन्वय से सर्वोदय होता है। विनोबा जी समाज के अंतिम आदमी को साथ लेकर चलने को ही तप मानते थे। भारत की सनातन दृष्टि की वैश्विकता पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि सनातन परंपरा का मूल करुणा और त्याग है और इस दिशा में आचार्यकुल के कार्य समाज के लिए नंदादीप की तरह है। उन्होंने विश्वास जताया कि आचार्यकुल मानवता के संगठन के यत्न के रूप में उभरेगा।

आचार्यकुल की नवनियुक्त अध्यक्ष डॉ. पुष्पिता अवस्थी ने कहा कि बापू और विनोबा का हर कथन आचरण से जुड़ा हुआ था। उनका मानना था कि शिक्षा को जीवन का साधन मानना

चाहिए न कि जीविका का। उन्होंने आचार्यकुल के कार्यक्रमों का जिक्र करते हुए कहा कि रचनात्मक कार्यक्रम की दिशा में आचार्यकुल आगे कार्य करता रहेगा। इस अवसर पर आचार्य डॉ. धर्मेंद्र जी, 95 वर्षीय वयोवृद्ध साधक राम भाऊ म्हस्कर,सुश्री प्रवीणा बहन, वाजपेयी जी,नवलबाबू,रामानंद जी,विनोद भाई,सुबोध दादा,डॉ. हीरालाल श्रीमाली,भाविनी बहन आदि ने अपनी बात रखी। आभार ज्ञापन मैथिली बहन ने किया। सर्वधर्म प्रार्थना के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।